अमृतलाल नागर के उपन्यास में पात्र–योजना

डॉ0 अमृता राज

महान साहित्यकार अमृतलाल नागर ने चौथे दशक के पूर्वाध में अपनी रचना यात्रा आरंभ की। बंगला के शरतचन्द्र हिन्दी में प्रेमचन्द और छायावादी कवियों की छत्रछाया में उनकी औपन्यासिक चेतना का विकास हुआ। जीवन को मुक्त हृदय और मुक्त मन से जीनेवाले साहित्यकारों में अग्रणी नागरी जी अपने उपन्यास लेखन कला में चाहे जिस विषय से जुड़े उनकी रचनाधर्मिता और उनके पात्र दोनों सजीव और एकाकार हो उठे। वे कोरी कल्पना का सहारा न लेकर जैसा देखा, सुना या भोगा उसी को वाणी दी और अभिव्यक्ति सामर्थ्य की उस विलक्षण प्रतिभा ने उन्हें पात्रों, घटनाओं, स्थितियों, चरित्रों के साथ समस्त अवस्थाओं में उसे समरस कर दिया। नागर जी की प्रतिभा और कथा–शैली की यह बहुत बड़ी विशेषता है कि अपने शिल्प और पात्रों को गढ़ने की सारी प्रक्रिया वे पाठक के समक्ष पूर्णरूपेण उद्‌घाटित कर देने के बाद ने केवल उससे अत्यधिक आत्मीयता और अंतरंगता स्थापित कर लेते हैं वरन् कथा को एक नये स्तर पर वास्तविक और प्रामाणिक स्वाद भी देने में सफलता हासिल करते हैं।